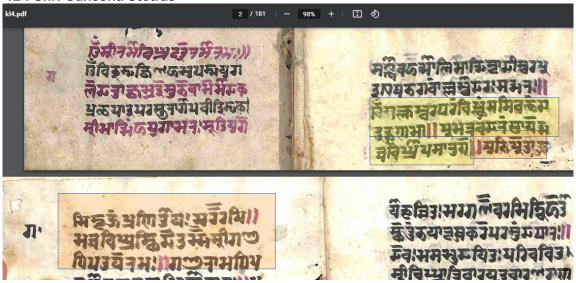
kl4.pdf: Contents: Shri Ganesha Stotras and Shrimad Bhagavad Gita Mala Mantra

Page 1-12: Shri Ganesha Stotras



अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थम् (Abheepsitaarth Sidhyartham) अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः | सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः || शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये

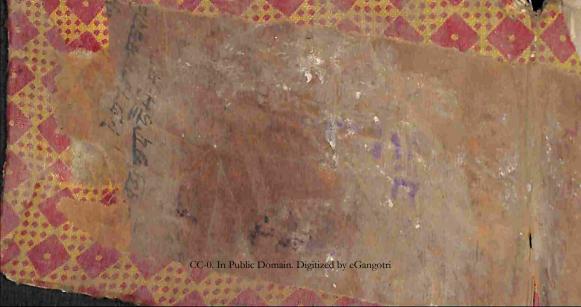


विघ्नविनाशक-गणेश-द्वादशनामस्तोत्रम्

सुमुखश्चैकदन्तश्च किपलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादिप।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

Page 12-181 : Shrimad Bhagavad Gita Mala Mantra





प्रमानमिव्ययनमन्त्रा। तिविक्रकि लजस्यकाथुरा लक्जाहाराइन्डामसंक्क अल्यात्र या सुनर्गी यवी दिरुक मीसदिजियासन्।म्हित्या

महेब्द्रभातिमाकरणीयुग् उत्पन्न जान सम्मा हिंगुक्त श्वरपाविश्वमिव्य हैंग उडगामा। युभन्नक्ष स्था विभागमाय।। यहिष्याः

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भिष्ठके अणि देवा सर्गिया। JI. भवविधानि प्रे उसम्मीगण विधउचनभः। गाञ्चनभविष वरीगणव क्रिस्तियन!।।थ यं इति । भगगलवाभिद्वित्रं ा: श्या स्टाम्य ज्वःभमसुक्याःयगिववित्र मीविध्यविवाययुवकारणम्गा वक्कामिक्रमाधिक

पिलेंगणकलकः।।लभ्रम्यञ्च विकरिविस्थरणिगणियः। प्र सक्रात्रण्टहेंबन्मभ्राग्नाः। इम्मैं अनिन भारिना भारिताल्य क्रमाञ्चा या या वडि मिर्वेड

गाः

निसलर्डि असि सउमा भाषि। रुगस विवाजमध्वम निजस उ मा सङ्गमसङ्ग्यविभ्रम क्षिरप्रक्रियमार्गित्र रगभगमयद्भिष्ठाम्।।स्रो गाजनकामभाइमवककवेगालचाभा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भव्यक्तमा । प्रमञ्जा गः **इक्र**ण्यास्यम्बर्गस्य हैं।।उम्हें की विश्वासी विश्वा रमक्तरमा। यथा गउँ राभ असंगाउमस्विम्भ उः।। यगा

युउगा एंडे स्टार किसभि उश्चिक्त सम्बद्धा स्थाप उंका अग्रम से संभवित

एकः॥यनकःम्लभ्रत्वेष्ठ मेभर्कितिम्बा। गर्नेक्र गर्मेयम्मिल्यगन्त्रमा। रगण्यगणस्यागगण्य युगिलमा। अयगैउगण्ह

JI.

जकग्विकण्यन्य।।लस्र ग्रह्में स्वासिद्धिक स्वासिक्ष मा णिमुकेम द्वाष्ट्रलक्म दिसबिहिंगी विश्व क्रिने उविहर कुंभलचंद्रभज्ञ खक्मा। गय

क्षश्चाय्वउद्यीय्उवाम लव्माध्यकक्रकमा। भंगम् वाम निरंकामी गरी भर थिल मा। भिनुसगार्थे मे हे विज्ञय

मज्ञायकमा। जरहायहार वनिजियानिक्सा।यस हरलगभगकलाभयगभग्र भा।भजयोगिक म्मक वपाठ उधिलभा। मर्रिक रस्त

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भारतामभारतामिक्या मापिमज्यविक्युयग्यम् विभिद्यम्भा।वलभैशियक यूम्पूण्लिभिज्यजनमा।। ये देशेक्सायमधिकलाथि

ग्रुभक्गायभा॥ महाध्यक्ष उयम्बर्गम्यनेवने। विणयन गाइनने ज्वानियान्य भागि ग्रमिष्या अस्य विश्वास्य विश्यास्य विश्वास्य विश्यास्य विश्वास्य विश्यास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्वास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्यास्य व रुमे।। मण्यमित्र यास्त्रीमञ्ज

.CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ने उपभूग। किल्ययमन् प्रीरेश JI. स्रोगडमफ्ना। मस्रोधरम् वर्षेत्रजंजित्राम्या किश्व म्यामग्रक्त स्था विकिथ लमा।किल ज़ेवरं लेग्नेविष्ट

HE ग्रेडिंग। निवस्ति । त्रीनेश्वतिमाणयुगमा। विग्राज भक्मलयमाडाण्ड्यनितिः भा मुलकु उक्र ग्रेम्थ म

र्धवस्मयाणियस्थित गि ग्णान्धर्म हो स्रोहिपत्र हित्य धिंडी स्त्रीता हत्य प्रकृतिक व्यात्री 到号这时||号号回刊17至号 THE Public Domain. Digitized by eGangotri

स्थाज अव्ययम्ब क क जामव सा ग्राम्बरणाव्यम् करम ज्ञवागुनमा। पिक्रभन्न एउ यसीसापसच गारिक उसा विक ब्राग्नम्भ ब्रुधायक्लग्वक

कारके रूप पड़त क्रिय रूप माश्चिषधिसं गमनिसु रूप्रकिनिति न सम्भागित्र गर्ड वक्य ज्यातिहम्हा Mo दिभया मभा भाग महारायभर नभा करने उत्ति व्यक्तिक भी विभार पण्यहम् भटहर न भिन् ाण उसे उसा दरम सुरु या ग In Public Domain, Digitized by Cangorn गमन्या मिम्या लेक्न गल्य

गी

ट्या साउँमा जनगयन सेनम **जिम्समी हवन्नी उपाला भन्** समीरगवा चेम्हा भए। धारा स्था अकः।।म्योद्याः भगमग्राव्याः ॥ममस्निज्ञमभ्रम्ह्रवामञ्ज

रुधमंत्रवीणमा। सञ्चयशाया उग्नामकंमर लंबणाउमकि।।बड इंभव्यप्रहर्भे क्रियशिभमां म मडिकीलकमा।। नेने विक्रिक भाभनेनमजियानम्याउद्य

जी 3

सहानुमा।।न्यन्त्रम् युग्यन मियविमन्गः॥इति उत्तरीहर्माः य के हैं य सम्बद्ध य सक्त हैं में स वसंद्रने।।मराज्यमध्यद्वा गाउ! किथा मलयभग उन्।।। इ

र ग्रीमकाकानमः ।। यस्य प्रमुख यानिम असे समा ।।। इतिक निश्चकरंग्न मः॥ गगविपानि। किंद्यानिमानवन्छ ठाउँ निमाउँ वि क्राउलकाया अस्टानमा॥ उत् मी े

DO TO THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF

तिकारामा। व्ययनप्ररामा ॥नेनिक्रकिक्रिकिस्मिनिनेन म्लियम्बक्शाउँ विक्रमययन्भ ।।नमन्त्रामयश्यम्भययोग नउ!।।ऽतिमासस्याजा। मुस्रह

यसम्ब्रियमक्रेईमें स्वयमा १ विमियायवभूण॥निड!भन्गाः क्षाक्रामलेंग्रमनखनः॥ ४६कव्। गयज्ञायष्ट्रसम्गज्ज्ञयालिस्रास समजभूमः॥इतिनेद्रययविधण

गीः

गगविषानिक हानि गगविक हारी निम उर्भायन सामित से भी र ज्या चितिया।।। समस्य समा **जिथजयभूतिविधिंग ह्यावरान्याय** लेगस्यरामनग्रिकायुगणभ

निरमहमकाराउँ। यह राम्। उव विक्रीक्रावर्गम् सुम्माराविरीम भुडु भन्माम्याभिर गव्जी उठव इधिली भा। निसं सुरक्ष सिना लवर्डिक्राविक्ययुग्रमेंबाय

गी।

नर्याकपराउँलाभकः भन्नतिर्देश नमयः यमियः॥ आय्यत्रयारे ए उयर्गम् कथालय।। छन्भम्य तक्षायगारम्भ उन्छ न मः॥ ३॥ स वैयनिधर्मे गार्वेर यूर्गेयालन इन

थार्जवद्याः समीच जनगुगी गभाउ मजगामावसम्बस्य वक्सण ज्यमक्रमभाक्रिकीयुग्नम् क्र अवक्रणगङ्गनभा।थाष्ट्रीयम्ड लउएगायस्यगालगाः रागील

औं!

यत्नमत्वयुष्ठवग्रीह्यू न्विति। कलनवलाजला। यमुरुभविक कथ्यिरमकरम्द्यम्वितिग्री जीतापल यश्रवाक्त नमीक्व उक्कमवाशियगमरवम्।मा

ग्रममलगीराजगर्नेक्रगंनानास नक्क्सरंजीक्यमं वेयन विधा भा। लेक्स सन्य द्वार करता। युयीयमनस्या क्रियम् ३३ यद्व जंकित्मलभूशिमनः म्यमा**णा**

6 अकक्री विवास लय स्राला खारी गी तिमा।यह्रयाउम्हर्व इयाअन्तर् भगवसाखायव्यवनन्त्रन म्बर्गा अनुविक्ति स्वाप्त सङ्गयम् इस्यान्यम् ज्ञायान्।

यसम्मा।। द्यान्वि उत्र उत्र उत्र भन्भायद्वतिययतिन्यस्तिन् विश्वसम्भाग अस्वायवस् अजान्त ग्रासमवग्रययुक्त

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वः। सम्भकः भारत्वे विभक्त गीः ग्रसन्नय।।।सन्नयग्रम्।। न्ध्राउधा प्रवानीक हरू महीपन क्षान्य सम्मास्य स्थापन मन्मव्वीजा। अधिकृषण्य

र जार नियमित्र किया है कि स यमपुरेल उन्मिञ्चल गीभरा। ३।। य रवरमज्युभक्तमञ्ज्यसम्य के।।यग्रानंविग्एन्नम्यम्नम् रवः॥णञ्जू इचिक रानःकामिरण

व्रगीरक्रा। अज्ञानिक गाविक हच्च गुभुव ॥ थायण भुव चित्र गी। उउउमाराष्ट्रकीरवाना। म्य मुर्चेप म्यानुभवाग्वभक्षाम् ।। मुस्त कं उविमिश्रायं उनिवेषित्र गाँउ भाग

यकभमसङ्ग्रस्याद्भाग्रहाज्ञ्यकिम जा।गाठकरीयमञ्जनकन्तरमञ समित्रियः। यगुरुमविक्र व्रुमं मार्गि सम्बगाउ॥ स्ट्रम्ब जवः सुरभम् जहरू गीविरः॥र

C-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मी।

नमस्युद्धाः भन्नगृत्वानग मा । । । यय सम्बद्ध रीक्षा है राह्य उमा। यद भेडिए भउस्य न्या का सगढि र हि उस्गा० ।। युन्युम्भवेषुयगरुगभवे

क्षिउः॥कीयम्बाकिरक्षेत्रक्ष सन्गविद्यान्य सम्भन्न नवस इंतर्ग्य इ: यि उम्म जः।। सिंदर क्रिन्डेच्चे सन्दर्भे भूउ थवा। गा।उउ:महाचुरुद्वयणमनक

र्गभाणः। भष्मवाह्ण इत्र सम गारे इसमलहवगा। ।।। इसमित 00 ये हर्जे भज्छ स्टू स्ट्रेनिस्ट्राभग वः या अवज्ञविष्टां महासूम् प्राप्तः । । भाषा अग्रहण सम्बद्ध

उग्राज्यार्थि क्रम्प्रमाजमञ्जूरी मक्राचक्रा।।०थ।मनजविगा यगणकं अभेग्रेगिष्टिः।।नकल मजम्बज्ञम्याधमान्यम् ्ण ।किन्न विप्यमिन्ने सियक्तिम्भ औं

जगवः॥ णश्रुमु भीवगण्डमार्थकः भगणिउः॥०॥म्यम्म्यम्यम्यम् मायमिवीयउ।भिक्तन्त्रमाजकाः मक्षरपाथम्य विकाशियम् ग अर भू के हम्म निवस्य विकास मार्थ

न्याष्ट्रवीम्बर्गित्वरग्रम् गा०९। अयहविक्रिशराध्या गभुःकियम्गः।।य्राज्ञमभुस्य उपन्तरस्य प्रताशिक्षां मंड्रक्य हा सिम्भाज भाग भाग

भूगनुन्म।सन्धमुक्यभूस् गीः रमें सम्ययसम् ॥ १०। याव वे उपी गैहाजयनका मानविक्र अपा क 03 **अयामज्ये दृहमिम त्रूल अभ**र् मा। ३३॥ ये बुभग्ग न व हा ज्या ७३

इसमाग्राः।।याग्राभुचन्द्रहरू। नु रिविष्किकी सविशास क्षेत्र वार्वाम । गवसज्ञिष्ठभीकर्मे गुरुक मन हरत।।सनयेनकर्यभ हम्काथाय इग्रवंडममा।। १म। ही या र्स

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

±0.≠

भाग अवया मार्ग के कि उसे मार्थ उक्प्रयाज्य विश्वसम्बर्गातः । नित्रे अथ उर्धमृतिकाराक्ति। थिस्त्रमधिरासज्या सुम्हा मानामुद्रभग्भागीस

CC-0. In Public Domain. Digitated by eGangot

मा १३० चुनगराह्य स्वतंसनयम् ठयाया उसमोह्नसक्नयस्य बझनविश्वारा । ३१। हा धरायाया विश्वविधीमित्रमव्वीउ जनगान्ध्रमश्चणन्त्र अयुग्रम

गी 00

स्यक्रिउसा ३३। सीमित्रसमा रिभम्प्रम्योगस्थी विथम् मरीरमरमाज्यन्न एय । १९॥ ग श्री समाजिता है । । नम्मज्ञ स्वस्य इस्मज्ञ मजीव्यस्

नः॥३।निभिज्ञनिम्यस्भिविय रीजिनकमव नम्मयेन्यम्भि जड्रम्यणनमाजव । ३० नकप्रति णयहस्रनगर्गभाषान्य हिं नेग्रलन्मिविक्रिक्ठिंग्रेलीव्जन

गाउअ। यथा भजकारियं निगरंगर्छ मीं! ग्रासाम्बिम्। उद्भवस्त्रिग्रम्ब युण्युक्तायगिमा सम्रदःथि 33° 00 अरम्बर्धवनमधाउभक्राभाउ ला व्याधिया स्टास्य वित

समाउमारगवरति सम्बद्धा उधिम इसम्न।। यथि इलिहार ग्रस्ट अविन्य सिंह इणाउर क्षेत्र कार्यातः स्थानम् न। या यस व स्वयं स्वयं है । उन्ह

उउगिवनः॥३०॥उसम्मन्दावयज्ञ-पाउराध्येश वाह्याना। सुणनेकि क्षण्डासामान्य । ११ ।।यह्यु उन्यहित किथाज के व **अः।। कल** क्व विषे के स्थानिक स्थानिक

थउक अ कंबनग्रायमभा है। थाधारमध्यविविद्यस्य कल्ड्य ठउनिसंस्थ छित्तर जन। ३०॥ कलडाय्यलगृतिकालयकाभा न्यनः। प्रमन्यन्त्रल्तह्य भपभित

ठवर्ग मामण्याहितवास्त्रभुक गीं 2विजलिया श्रीयत्र अभव स्वाग्यउवरुभग्नाः म्ह स्र 50 एप इंक ति स्थानिक विकास थउड़ि थिउरिक्यं लथ्यि दिस्क

या। ४३ इसेरेडेक लथ्यरावरु मद्भाक्यकः। उद्यन्त्रिण्य कलामान्याः म्यान्य निसार प्राप्त स्थानित नग्किनिय उनि भेठन ग्रीर च सम्

मी •

मतिवामक स्थाय व इस्विभागव वमा। यम्यसम्भावले हेन जर्भ गान्सहरा।।मथ।यिकमासभुरी क्रासमस्मस्यण्यशाण्डरा अगल्डिस ग्रेंडिस उर्व गाउँ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

का सुक्सालीमं विस्तासम् किउमा। मनदश्यसस्ययमकीवि करमशाना आक्रांसम्भगसायाः जने उड़्य यह जै। कि म्हार यक्ती च्डक्रीरेश्वया उपाश्राम्या गरा

वस्ति सम्प्राम् स्वास्य स्वास्य गी। न॥ उसके। भागवें जी भागता का 30 अहनामागुउनक इकिसका निर्मा वाष्ट्रयहरू है है समाजित के गाजरा जकामास्य अनित वक्क सीय है गा[।]।।

र्गिरिवर्गिक्याना। ए। नाउ किन्नः कडरवेरारीययक्रणार्थ भयमिकियानेणययः॥यानवर जरुनिणागीवियं यभ्यस्वि राभुमापणराभूः।।ठाक्य गी। 3

द्रमध्यज्ञस्रकावः भक्तभिष्ठ प्रभागक्षण ।। प्राथम् विविद्ध कि उसि स्थान विमंत्राय्या मागानिक म यम्भिममा यत्र शह कम्ब

यलभित्रियणभा। म्वायक्रम वसयबस्पज्ञरणभगज्ञभिष मणिय इसे ॥ आसङ्घ य उवाम

म्यक्रिक्टिक विकास स्थान गीः अंडेम: यजम विवर १३। भन 323 वैत्रवयस्त्रविधी स्वीसम्बा । विस्ति के अवस्थित विस्ति । स्वासिक विस्ति । असम्सु यूष्ट्र वाम्युक्त समा

ग्रसनगाग्रसम् न मिनियान्त्र गा ००। नडबन्जराउनमनडनमणना वियाः।।नम्बन्हिष्टभःभववय मं असम्।।०३।।इतिनिम्हिस् क्रकंभग्रयं वनगाग। उम्मका वर

03

3

युभिजीरभार नम्हितां भाराभा व्यासकी नेयमी उस्त्र सायमः। यम सुगभायायेनीनराभागितिकस् क्राउँ॥०मायंदिन्ययच्युस्य युरुधं का समनः प्रभापपीर

में स्थाउरायक ल्या है। जिस्मा में जी **च्डिक वैन्छ विद्युम् उ**भाउठय रियम्भे उस्ते ने स्ट्राम्य क्रामिवरामि उउदि चिनमच भिष्ठा माविरामम हयसा सन

मी अ

यम १ हि हि । हि अम हि हि हि जिन्देस्जाः मगीरिलः।। स्नाम नयमयस्यभावम्यस्य श्रीयाग्नविद्यास्त्राहर उज्उसा। उर्हे जीनिव रानी उना

उनक्रामिन यह इ'ठविश्वान्। क्यः। । मार्गित्र । मार्गियः मार्गित जराजसानम्यागारा रामिनिन्यग्रमणम्बयम्॥

क्षभभनभः याजक्या। यात्र गीः विक्रमा।३०। तमाभागित्व नियमाविजयनवानिग्राकुतिन 37 रेथगाल। उम्मग्रीगलिवज यक्तीकार्यम्भयविन्दानिक्र

जी अशनेनं क्रिक्र हो सभा लिने नम्जितिमाःकिष्णाम् यज्ञभैनमिथयाजभाग उ:॥१३॥ मस्त्रियमाण्डियमा क्रियम एवम। निर्श्ति वर्गा क्षेत्रम

Service Control

अंग

लेंग्सनाउन्याम्हर्जियमिर्म्य भविकदयसम् ॥ । उस्माप्तं वि किंडनेगर्सिट सहिमाउपा मसम्नेनिर एउनिरंब भरूमार उमा। उसियं अजवर्क नेवस्

हैं है के स्थारित कि इस हकी THE BEHEMFEEN योग्डिय उन्हें ने इस है सिर्धा अ ।।यहजानिकुगनिक्जमसनि क्या। यहक्रियम् इव उत्कथ

विज्वनगाअग्रामञ्जदवयञ्जकञ्ज गी। म्नाड्यक्वरविष्युव्यक्वराध्य वद्बवन्य । मानिम्बा छनेव 30 मड्निकचाशशास्त्रिम वस्यम्जभवस्य ।।। उसाम्

चाल्जिंगनिन्द्रम्भिज्ञभाविभावे अयम मियम मियम बहा निक मिर्डा मद्रिमा। वर्गाद्वयञ्च इयञ्जारू। यस्नविष्ठगा ३०।यम् इयम्य वधनकामया वा अगा सिवान

वियाः यजलक नेयन् भी ग्रामा । ११ M. ।। त्रवम्ब्रीसमय असद्गमनकी व्राप्त 30 उउ:श्वामकी डिम्हिड या यमवा अभारहाकि हाशिक है। कैंबविष्ठां उत्यामा। मेरुविरा

स्माहितिया प्राहितिस्य रयम् छन्याउभर्य नरमा मः॥युगम्डवक्रभंडेक्ड्रायम् भिलाय्यवमा। ३५। म्बह्वाज इवल्डाक्रविष्ठवाक्रमानिक

उवसम्भड्डिकः। प्रश्रेत्रिक्सा। गी **७उवायायामिस संजिता उवार्ट्स** F समजीमा। उसा च डिस्का नेयय इयवजन्त्र स्थायन् । यसम् । वसम् । वसम

यगुराभुनवं यायमवास्थ्रीमा। अभा **ग्रमामं जिल्लामं एक कि में स्वाम्य कि में स्वाम्य कि कि में में स्वाम्य कि कि में स्वाम्य कि में स्वाम्य कि कि में स्वाम्य कि कि में स्वाम्य कि कि में स्वाम्य कि में स्वाम्य कि कि में स्वाम्य कि कि में स्वाम्य कि कि में स्वाम्य कि में स्वाम क** विसम्स्य उ। विद्ययम्य या अक मवर्मुणस्मा।३९।निजिर इ.सनामिभ्र यह वर्च निव्हें ॥ भ

न्गमस्त्रामस्यायाम् उरवा ग्रीः उगाम। हावसायाधिक वार्डि विभ **५कर्नकर्ना व्यक्तमाम् ५**न्छञ् E0. ब्रह्म विस्थान मा हवाया भिभा यथि। जनम्मूब्रम् इतियद्वि ।। वि

म्बाम्याःथाजगञ्चभीविवाकिन्। कासग्रन!स्त्रगणासक्मक ल्यमभाति यावस्थवजला है गाउँ गमुद्धमङ्गगं उयाथक उम्म थेरी भगाइवसायाद्मिक वृद्धिः समाग

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotr

रजीयर

नविपीयुग्राम्मार्येयदाविधयानु गी रानिसंग्रेट कवज्ञन। निसंस्थ निरमद्भः निर्याह्मभुद्रकर गम्यायक्रम् उरुपानसन्तरः स श्रेउमक्।।उन्यम्यव्यव्यव्य

लस्विएउ:।।म्भाक्भ्रञ्चापेक्प स्याप्त लेखक्रम्य । स्वयंत्र जर्रमाम्स्य म्यान्यार्थे 引哉!而不事好!你科系是影呀!語 याभिन्नभिन्नभभेग्रुसभाग्रंथी

महासकाहताला हिस्स गीः यगाम्नास्या। ब्रम्हामालभाविष्ठ 33 व्याधिक विश्वास्त्र विष्वास्त्र विश्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त विष्वास्त विष्वास्त विष्वास्त्र विष्वास्त विष्वास्त्र विष्वास्त विष्य स्तिष्त विष्वास्त विष्य स् जेगाजजीव उर्देश हैं । उ सन्धाययूण्स्याः कम्स्रका

मलभाकमगाविद्यमादिकल शक्ता भनी या ना गाम वन विनिम् ज्ञायमायमाथायम उसजकिलनेवृद्धित विश्वति । अर गाउँ । तिहार स्वत्य स्वतिहार स्वतिहार

आं अम

म्रोवेप्रध्यश्उयम्भ्रभ्रोतिव त्या समण्यम्ला ब्रीच सम्येग भवाधियाविक नगवामा किउम्हर्मक एस ममा विस् स्र क्रमवाभित्रज्ञानिक्रमकामजिक्र

सभीउव्याउकिमगायमगाउमीर गवानुवाम।। भूगाजियमक्स भवान्य जभनगागना अग्रहिंवा मन्ड्यः। सिउभूग्रास्टिम् इ। १११ । क्रायश्चनित्र अस्मास्य भिवा

जी। 3थ

उम्दर्भावीउग्गाठयद्विपानितुः यी अनिरुख देशा थे।।यः अवरू न क्षित्र महस्य स्वरम् । रित्रिया एउट कि हिर्दिक विकास उ। थि। यमभजरउम्मयज्ञभङ्ग

रीनमचमः॥इमियानीभियाज हसस्यम् प्रतिश्वाविस याविनवाज्ञेनग्रहम्किनाभ्य वलमारस्याग्रहानवाउँ॥थ्रा यार्गेक विक्रेंचेय युग्य स्थारिय विग्री

डिभ्यालयभ्यीनिक रित्र विभूमे गाः सन्।। । जनिस्यालस्य स्युक्त 30 सभीउमचर!।।वसिक्यसिया लिउस गुरु यु ति क्षिजा विवास यो विभ्यायसः भन्न अथए य जास

श्रम् अयाका भाका महिल्ला यज्ञाञ्जाच्याफ्रवितममेष्ठः सभ क्र इस्विवस्थाः॥स्र विद्याद्वर वित्रमेश्वित्रमम् भूल वृति। ग्रा क्षिवियुक्ते स्विधयानि भ्रयम्

गा। अस्ववृति पया स्थानमि मक्रिति। वस्तिम् सम्बन्धान जिस्हारम्भारम्य । स्थान्य स्थान 370 अब्रिक्त स्ट्रिक्टी स्ट्रिक्टी स्ट्रिक्टिक वित्रयुक्तस्यग्यकस्यवना

नम्यवयाःमित्रमात्रस्ताः ामा। जेवाडिम्या कियाग्य सन्निवियीयज्ञाउम्भूष्याउपम वयुगविभवन्दिभा जाउस ह समजवर्जनगाजी गनिम चमः॥

जी। अड डिम्बाल् भिया उत्सस्य भी श्रिमा विमास व असे में ने उसंग्राडिसंयभी। यस्ग्राडिक उतिसनिमयष्टउसनः। अभयर मल्मम्लयुविश्वसम्बद्धाः यूवि मित्रयात्राप्रिक्सार्यभूविमित्रिस् वसमान्त्रमञ्जानक् भक्तभी। १ वि जयकासङ् भवायभाष्ट्रावित्स्थ ज्यानिसमित्रज्ञ इरासमानिमा गर्विः।।१०।।।भग्राकोतिकविःया

उनेगं या धविमक्ति। भिराधाना गी। कलियद्वजनिवाणभणकिति।।१३।। 3/0 **उत्रमाकगद्दा अथान्य** बेफाविस्याय्यामास्य मोहाभा लनसंबाद्धभारवंग नमित्रार्थ

राया।। अग्रान्यमाएया भीग्रह्मास्मान्द्रिल्लास् नगउद्विक अणि ग्रांने संवितिये णयभिक्मवा। शासम्बन् गरानवित्र भेजयभीवम्।। उपक

वद्भविश्वयनम्येजभभयाभाष 动。 मीकगवानवाम।।लंकिसिन्।। वियानिश्वाप्राभेकाभयानया। नयरानमास्याक्षयरानयीग मभा । अनकभ जभग । सन्ध

स्यमसम्बन्धानमसहस्रम् कृत भित्रिसमीपग्रक्षति॥ मानिजिक विज्ञणभिष्ण विश्व ग किराउ कि नमा की भवा स् द्यां ग्राज्यां ।। या क्या भ्रायां

भयभ्यसम्भनभगभगना । उ गी। अयक विभन्न समिया । संस्था वायि सिम्यालिया FO स्मित्यसारठउ ज्ञानाक्रमीस् यै। कथयग्रमभज्ञःभविमिध

उ।।नियांक्रकक्षारंक्रमध्येत क्रमलः॥मगीरवारायिम्उन्धा भित्रम्बम् ।।।।।यद्यक्रम् स्वार्शित हिष्टि किया किया है। Digitized by eGangotri

भवयन्नः भाभाभागां वाम्भ गीं रुपारि ॥ मननम् भविस्त्रम् वैश्विभक्षममुका । ज्वास्वय 王引 उन्ने उद्येग क्या या स्था या स्था गरुवयन्।म्यःपाभनाभम्।००

उभारिंगा गिर्विष्य एस्वया रुविगः॥ रेम राम्भ्रणयहर्ये उद्गे संगण्यभः। यश्रामिश्रामित्राभन सर्जमनकिन्यः।। इक्षउउउपा गागयगम्बाज्ञकरण्या । अह

引 3 于3 ग्रम्बविक गनियाज्ञ मन्मकव् । यहार विध्यत्तर्थेय स्ट्रांक स्म सम्बंगामा कथा विकास विविधि गाउवज्यनिष्टयक्रभुविश्वित्रभा।

वियुविशियां नानवायगीलया ।। मुणमुरिस्यामसे सामाज मणीवित्र।।यसुम् मगतिवसुम म्डयड्यान्यः॥ युक्तव्यम्भ उ असुसकरनविस्त्रा।०गानैवर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

689

ध्तरेगज्ञें नतरे वे विक्रम् Jil! भवम्बर्गकिष्टम्म्याउस म्भज्ञ भगुकादक सम्भाग्य 工工 श्चिमज्ञ का विस्थान - यम् यः॥००॥क्यालवित्रभा

डिमार्कि गणनक कया। लि क्सर्याम् क्रिप्ता यह मामानिस्य उम्बर्गणन्।। सय स्थान महालहाहिहहरहरक करा

थाजाभिकरहोरियलक्षिक Jil. द्वना ननवायुमवायुववुग न्यक्रमाला अध्यक्ति। 子到 नवाष्ण्यक अध्यक्ति। ममवज्ञ वर्ग वमन्धः याज्

भवमः १९६। उद्योग्यामिलंक नेक्टक्यमम्ब्रम्। सह्यस्य करासम्बद्धाः समास्याः अस मजाक्रा द्वित्र संयम किता क्या कराई इस्थाभक विकी

ध्रेंबक्सप्रज्ञा ३५। नविक्र गी। नयम्यनकभित्राभगाध्यक क्रमालिविश्व हुजा समाम् । वर्ग युरु उ: दियम छनि गुले! कुमिल्स चमः।। यद्वष्टाविस्रक्यक्राक्राधाः

भरू ।। ११। उन्न वित्रुभक्ष वर्ष गुलक भविक्यायः।। राष्ट्रिकार्यः।। भरानस्य अ। यहाउन्तासम्ब भग्नान्य लक्ष्मा। उन्हें युविष्य रुहा वित्रविम्लयं उगा १९॥भयिभ

रहत्तर सिल्लास्ड कार्या गीः भा।निगमीविससँ उर्ग्यह्रभ विगाउ हार शिष्टा शिष्टा हार हि भगेउ भू तिमानवाः। । स्युवन्ते । य जैभ इने उधिक मिहि। ३० विन्न

उम्बस्यवनगर्विश्वतिसभाग भचन्न विभ्रतिभाविष्ठ नश्वप म्डमः।।३३।सिरुप्तम्भुडस्

अभ्यम् भियम् जगग्नु थाह गी विक जी। उद्यवसमामक जिल्ह यवियात्रिक्त ।। अस्। स्यास्यास्य £3 यल:भावपायम्यनिक्रम् स्रायनियनस्यः स्रुव्यावजः ३४

मातिम्रम्यः। ग्रिस्चियः भ्रयव लाइविनयिता ३:॥३वासी हमवा च। वेक्।।क्रमध्रम्भणम् व्यव्याम् भहवः॥भ्रजभ्य भक्षभणभाषा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eC

भर्घ

केनविकवितिलाभा। १३१। मुस्र वियाउविकरमारु इस स्वास् यिवच्च न या उत्तर स्वा उत्तरमा वारमा १३। सवा ३ छन् म ३ न छ निनिहर्गिक्शाक्रभगुयक

क्रिंचयम्थाञ्चलनमा ३०। इशि गिल्भनेबिडिशिपिसेनेसेडिंग 17 विस्ठिय इस्य न भाव इस्रि नमा माउमाउमित्रियाद्यामि यस्टाउस्ह। यभाग्यान्याहिङ्ग

खनविद्यन समामिन। इसियाला गीः भारकिशिवह। त्राभना। भन्म ससुयग्राकिद्वयाः याउस्मा गिव £3° 20 17、14年后还是的社会是此代码 क्रिम्भक्रकक्रम् उपनुग्रम्म 13

डिमिक्स विमान्य में ब्रिक्स करा विक्रयायग्रमास्त्रात्याग्रमा न्मक्रमयेशे न भर्तीयेस्यः॥३ सीरगवानकाण। इसविवस्तर्ये गिर्जियान्ज सहयमाविवसास

नवभूष्ट्रस्वरिक्ववव्यागाः। प्र गी वंधासायाय्यीसमारण धर्यित्नः I. मक लेन्ड मजर येग्ने भूर येग्न थु० य। १। भारत्यभया उठ्येगः भुजः भगउनः।। ठर्जी भागाम् विज्ञ

म्यां ठवरिंग स्यां गासिव सुरा।। क्षमं अञ्चल से अवस्था से अ विग्रमासीर मन्त्रकामा वक्रिन संवरीमित्राकानियमान्य ।

म् भू

। अणिधिस बहय गुजु गुगमी चु रिधिसना। यह विश्वामिष्य यस स्वास्त्रस्यया । यमयम्दि यमस्यानिहवतिका अस्यान

भगम् अन्य स्थानिक स्था विश्व्यसम्प्रने विन्यस्य स्था प्रभक्तप्रायम्बर्धस्यायग्रायग ।। उ। णभकसम्मिद्धस्वविद्यान्त्र उ:।। हकुफें जियन समिति भामिति भ

लना। भारी ग्राग्य विवास संवास सी सयमिशाविजवेश्वन्यसम्भग मक्रवस्थारः॥०॥व्यवस्था इने असे विवेद लिखा समावद उवरवेभवरा'यज्ञ सवम्॥भाक

इउ:कम् क्रिक्स विया वार्ष गः॥हायाद्याद्यमन्यस्तिकितिक विक्रमाण अपाउचन्हमयभ्य अंगलक्रमविह्याम्॥ उसक्र ासियमाविद्यक्**रपस्थ्यसा**।

मिम थर

नमंक्रा लिलिभाविन सक्स्रात लेम्प्या इतिमार्चिक स्वानिक स क्रिन्सवस्य । वर्षा हार्यक सम्बापिसमज्ञितः। क्राक्रम वउस्तर्वयवः अचउरहउसः ।०थ

किंक्स कि सक्स विक्व वर्षे धर्मि कि उ उउक्म भवहा भियञ्जु भेह्न समुद्र गान्नाक्मल्हियवैम्हर्वेम्हर विकम्ला।। यक्म व्यवहराजगक अल्गितिः॥०१॥कमटकमयः।यन्

मी म्यू

एकसिक्स अवस्था भविष्माभ श्चिमपग्रह्य के कमत्रा । यस्मान्यामा क्रम्भ छल। विलागायमध्यम्यक्रमला मफायिक्वं वया।।००।।इज्रोक

महल्मजीन उर्यं निगम्य। क मद्यियगुरीपनैविकिष्ठ हरोते। सः॥ ३। निगमीद उगिर कुर इक्स चयािग्रजः।। मग्रायकवलक्रमत वर्गर्रेतिकिलियमा। ३०॥यम् स

लाहभन्न संस्कृती है विसस्त गीः । असः सिद्धविसङ्ग्रेग्टाइपि 手 थ्य निवस्त्रा।३३॥गउसन्नस्न यस्याविक उम्बमः।।यस्य माउ:क्रामसग्यविलायुगा

बुद्धार्थालं बुद्धांक विश्वकार्योप्रदर्धाः क्रामा। ब्रह्मव उन्ग च स्वर्ध क्रमसम्पारा। अमाज्वसवय् न्यां योगिन। यह यभ आ ब्राज ग्रवाययययान्वयस्थाति।।३५

मेराजीनी भ्रयाश्वस्य स्थानी गी। स्यक्ति।। मस्मीविध्यान 王 था इंडिस्याचिष्यकृति। श्वास वाली भियक अलि यालक अ िक्या । अस्य स्थार्थि

राष्ट्रिय निर्मा १९ । इस्ति । इस्ति । इस्ति । इस्ति । अधेयक्षयेगयक्षम् वाध्यास्त्रिप रायस्ययस्य व्यापासम्बद्ध गः॥ ३३॥ मयाने ग्राह्मी यां ने या ल भने उद्याया। गुण्यम् वाजी

मी।

म्हाराज्यसयग्वज्ञाअशाम यगेनेयग्रजगः भू जभू लस्या गि।। भवस्रेययाविद्यायक्षिय कि जिस्।।।।।।वस्मिस्र भाउउर्गा या जेवल सर उन्सा । नयल के स्य

म्बार्थित स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत क्रविणयशिवउग्रद्धाः सम्माक् भगविष्ठिण भवानवस्था विभिन्न । १३। मयास्वसयामृहङ्गययाः यग्रय। सर्कमाणलयक्षत्रयन्य

が大き

गिभमास्त्र।।अ।।अविविद्यालया उनयिए मनस्या। उसम्ह्रान उद्धन्य । हिल्ली सहस्र हिल्ली हिल्ली हैं। इड नयन में जसवया स्वीस्या कवा।यनकुग्राच्यानक्राध्य

रवेंभिया। श्रीयम्मिभगयह! भ वह।यायठाउमः॥सबद्भवत ववागिनं सन्तिष्ठिमा इस्वविणिभ समिन्नियं सम्मान्य वि! सवक्या लिडस्स् भाइनाउम

TH # 39

निहरिन्सक्मयिव्यक्षिक्रविश्व ।।उद्वयंग्रमंभद्दःकालगद्भिन्। विक्रिता अ। सङ्ग्यान न उत्तर । रासंयरिष्या। श्रनेल हा योगमान ममिर्ज्जिया हु। ३०। मण्डू

मरुग न ज ममया र विन ऋति। न यंलिकि भिन्यरन्भागभमया क नाम यामहमुकमालेखन सिव्यम्मयसा/यसवेत्रक मिलिनवम्तियनस्थार्थाः

उसम्बद्धनम्बद्धन्यस् राज राशिष्ठ वसमययग्रामा विश्वेद्विश्वराउद्याह्याहराहरू ग्रवज्ञी ग्रम्थान्य ब्रम्भाव व गयगमभूम्।ठभूलनम्

रेक्सभंशभर्यग्रीग्रामग्उजे एए श्रम् मान्यान विकास विका तस्य यदेगे ममेभ भागक्या उथैंग्कं उसे कृष्णिसनि चिउसो।।।। त्रमीहरावाचवाम।। संदूष्मां क्यंपे

गञ्जिति! म्ब्यमक ग्वस्ते।। उद्यस्त ग्रीः क्रमस्यभाद्र सर्वे गिविष्र गाँउ ।।ग्रयः भविद्वसं श्रमीयन्त्रिष नक्षतानिभुसिक्रिमकवर्तिम् णवस्युभएउ॥आमाएयारीय

वयालाः भूवम् विनयित्रगः।। ग्रिक्स एकितः सम्यक्यविक्रतिका वसाएं स्परंकतं उद्देशीय विगर् ।।। क्रमांहम्यामया यहिमयह ति।।थ।मंद्राभस्भाजकर्त्रः।यमार

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ध्रमध्याउशार्थ्यायुक्तिभतिवृद्धानि गीः रेळाग्रहियां भाषिमयुक्तिविम्द्रा गाउँदि ।।नेविकिद्विद्वाभीतियुक्तेभहरउउडे। 周到||阳县第33mm部以3333 भवद्भग्रहाम् ज्वामन्त्रियः

स्यम्भाशाय्त्रयविस्रोण्ड्य ज्ञामियविभियविशा दिस्यानी किए म्यक्म लिय है कि कि या। लिएउन्समाधन्यस्थ्यः भिवा

सस्माण कचनमनमाद्युक्व भी थ लेतिस्याय।।यंगिरःक सत्तत्त विसर्वे हिस्सि हिस्सि हिस्सि ही देशक्यमा। विश्वज्ञःकामका उल्लामज मिहिस लिय कि सि । १०। इंडि हिरी युज्ञ:कमनलर्डाभावभग्नात्र

सहस्रासुस्राणवमी। सवकारिय नाला रहर कहार कार्या कर्रहन्कज्ञाललक्स्यर्गाव भक्तः॥नक्रम् दलस्याभुरुव्य भवात हिक्द्रिया । विद्यास्थ गी।

न्यस्त्रविकः॥मञ्जन्या द्वाप्रणाः इंहणहोत्रुस हिन्दू नन उउ ए इन य साना मि उभा स्त्रशाउँभागिह्यकुनेभ्क मयाउउँभगान्नाउन्ह्य

मुग्रानमित्रं सुग्राणः॥ग बरुभगगवार्दे प्रतिच उकलायाः ॥ भाविकृतिन्यमयत्रेब्द्धान्याविक भिनि।। मनिम्बस्यक् मुप्राक्तिः समम्बिनः॥०९॥४हवडिताःसन

यथा स्थान स् मब्द्धारमा चूलाल इभिज्ञाः॥००। न्यहरूकिय्याधनीकुणकुधम वियमागिक रवित्र संभवित्र विद्या बुक्ति सिक्स विशाविक स्थानिक सिक्स विश्वन

अअविक्र अनिय स्वामा। सर् द्यायका सभावसङ्गार ।। बहुनसम्बर्गिकाम्मार्थनयाम्। न्य। महत्रवाः कात्रयन्यभगभगन

by eGangotri या अधिमङ्गरीहेवया सङ्ग्रह्मा

ीति ५७

गुनाम् गुरुक्षकलकदक्षक्रां। वशासभंज्ञभीरुपैगीयनिवर्वा माद्रया।।।वमहामितियक रा देगाउविदिया प्रवानिष्ठ सहस्रम ग्रह्मयंगीरवीकच्चनाआस्क

निभ्नयोग्कभकाग्लभष्ट्य याग उमस्उस्वमभाकारणभएउ॥३ ।।यम्।किनिवायक्रियक्रियक्रियक्रिय **अर्ग । सन्भावत्य मंद्रपीर्यगाउ**क सम्बद्धाम।।उद्दरम्भनाञ्चनम्

नभवभाग्यगा मक्रवहार् वेव र्गीय र हरा इति यग इति।। या वहरा ग्रान्स्य स्वयं स् वुगा विशिवास्त्र नः युमानुस्य य यगमाभभाकि ३।। मीउन्नस पनः प्ययुग्यासार्यसार्यसार्यः। 创现于自己于这种不断也特殊 शाउँ भिरा।। युज इ द सुउँ येरीभ भन्ने भूमा क क्षुत्र।। अह भिर गी

द्रमभीन्मस्युज्ञस्वत्रुस्था प्रश्रीयम्भ भववितिम स्डे।।७॥र्थगीयक्षीउभउउभग्र नग्राधिककामाः हसीसीमी जार म'निरमीरथरिय्जः।।०५। मुक्रेके

मध्विश्वाधिक्र रामभन्मा जनः॥ न्डिकु उनाउनी में म्लागानक में उरमा।००। उउकारा भनत राम उरि डिस्यित्यः।। उथिवस्य सन्यक्ष ह्यास्मिवमुद्या १० शासमक्य

ज़ी 13

मिर्ग्यावणग्यवस्ति कित्रा। भेष क्रमिक्यं स्वीक्रममानवलिक यग।।०३।।भूमागुः प्राविग उठी व बिउंचे असी उसे स्था । जाये

फ्रज्वं सक्रकार्यक्रीनय उसान मः॥मार्विचालयाम्भमम्भ विग्रहि॥ ०थ।। नार अउस येगि भि नेमेक्जसन्त्रस्थान्यस्थान अरुग्र उनवणज्ञन। राज्य मार्जिं

तीं १३

विजास्वज्ञमस्वक्रभाव क्रस्रभवर्वेणस्वीत्रविज्ञः ग क्रााण्यायमियउगिरसम्बर्ध वावविश्व ।। तिः सक्तः समक्रम हैं युक्त इंस्ट्राउम्। ०३। युक्त भी

निवाउर्छने इत्तर्भे यसप्सा उपा येति। नेयर कि उस्यक्त उपरास्त्र ना १०९।य उथा भडिएउं निम च्यामिवया। य रमिवास गमानेय समामानि उस है।।१॰ ॥ सणमाडविकयरमुग्राह्मभागि

शि-

यमा।विषयर मेवायं सिज ब्रला उर्रा । ३ श्रीयलहा मध्य ज्ञान है भरे उनाधिक उउशायिक विज्ञान मार्थ नग्रमणियिवमञ्जी।अधारिक कः गमयगविद्यगियगभग्रियमा

भारे ब्रियेन ये के हिंचे ग्री रिविक में उ मग्रामद्रल्यम्डव्यक्रमस्त्राभ ज्ञानमध्यः॥ भनस्वित्रयगुःभ म्यामच्याणीराजीउया। गर

जी.

मंभ्रमनहरूनकि कि पिक उयगाअपायउँयउँनि चरिसन श्रिक्त मिनि समा । उउसे उनिय ध्राम्य स्वयमनयगार्थ। भ्र मानुभन्भक्रनयगिन्भणभाग

भा। उपितमाचारणमं ब्रज्ज उसक न्स्यमा। ३१।। यज्ञ न वसम्प्रान यंगीविगाउकलम् यः।। सम्पन्तुर्व मस्यम्बन्धामम्ब । ३३। सम इउस्त्रभाग्नान्यव ग्रानिमान्नी॥

अंग

क्र.स.च्यारियसिक्साक अवस्था कुल स्था के तिया अ विषर्ह्सिक्तिक्तिह्याहिशा वसवस्था।। उसकितग्रहभ हेवार्यित्य सम्भागा। अस्।। उ

िठगवान्यमाम्समयमज वर्ष्ट्रभनिम् तिगुर्फ्रमल्सा। मृह्य संनडका जैय वैगर्ण मग्रेष्ट्र जे ३५। मुसयग्रास नायरीमधन्यद विसमितिः।। वस्यान्य वाज्य वज्ञामहा

वस्यस्यायः॥३०॥यत्तवर् गाम्योसम्बर्धर्वयर्थयम् 13 लउभागभागुगुग्यगभाभ हिक्गाविज्ञास्ति।।३१।किव नैंडयविक्र सम्बन्धिन कृतिवन हो

मया भें भका कर्क विसम्बद्धाः यवि॥ ३३। ग्रिसम्मयवस्रक्राभः द्रध्मभवः।।।इग्रः। समयस्य ख अन्य प्रमुख ।। अवार में कार नवामा। याजनवेजनमग्रियामस्य

जी:

विद्यानिकक्लिकक्षिय जिंगगा कि विकास मिल्या ग्रंजिक नियु मार्च मार्था । मीनंगीभागोर्डियाङ्गीरुएय उ। म् । मुस्य योग मयक लेठ

विवयीभग्भगामग्रीहरूतेहउ रंसिक्रण सयमीम समाप्त्राष्ठ अविक्सियां लक्ष्यें चर्चित्र कसा।यउउमउउँक्यःमसिङ्क जनस्य।। स्वाधारामयान्यिक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGango

'याक्वमीधमन्॥तिम्हु स्वरिष वगसमकन्द्रानिवन नामि युग्हासग्रस्यगीसम्ब विया। यनेक गामामामाम्य यांत्र यांगातिसा। स्था। उपसिक्

CC-0 In Public Domain Digitized by eGangotri

विक्वागाञ्चन है यिम डीपक्रा। **事角を到伯泰亞利3和25利人** हराज्य।। म्यायिमामय थामक्र उरा गुरा म्या महा गाउ णाउयमभ्ममगुज्ञ संभ उ ॥ इ ॥

जी 30

उतिसीकगवज्ञी असमिस्स व क्रविनुधार्वगमास्त्रित्राह नस्वाम्यस् भ्यमयग्रामाभ गाभयाभजभनःथाज्ञयंगयुर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क्रममग्रा ।। मुसमयस सग्रम यमस्मिन स्था । । स्वरं सिवयनिम्बह्यस्मयः।।यह उग्निक्व यह इउत्सव मिस्य ।। अ 出机器可能不够有的一种

चया।यराभाधिभिक्वनं क्रि सम्बोडिउड उशाउ। क्रिसिंगधीनले वयु: विभन्ने विक्रियम। यज्ञ 18 ग्रीय मेरिज युरु ति उस्यामा मयायभागमञ्जूष्ठाविषिभ

यग्भा। णीवङ्गं भज्ञ वर्ष्वयर्थे गरउगागगा। था एउन् नीने इगनि सक्लीर्यणस्याम्बह्तरम् स्र गाः युरुवः युल्यसम्। अभाः य । अस्। विस्। विस्वित स्थित स्थित स्थानित

अविभिम्पें अर्भिलग्र ७५व॥ सी भारभेजसभक्षेत्रयम्कास्मा 7 मिसर्गा भूलवः भववग्रम 33 क् । विक्र मुख्या अ। अ। अस्मात्र । या विक्र विक्

णीवनंभचक्र वस्त्र या निया शिवामा भन्न जुगरा विश्व यक्तभग उनमा। विद्विविभगभ भिभेडेगानुगासिन मकसा। ०५। व लंबलव उपग्रांक का भगगाविव लिए

गी। क्षक ही परहत्य हो। विश्व हार व वगणमस्माग्रह्माम्बर्गाम् विग्निक्त्रक्रियां अधिक विग्निक्ष

गागग। मिर्हिन् निरमिर्हा यसम्बयमा। अ। जिने कि येखेल मे योससमयम् उद्यासम्बय् यह जभयामग्रा । हिल्ला स्थानमार क्षतिर्भाताः भूभवृत्तिरामा।।भा

ययायक्र उद्यन यस्र के वसामित गी भण्याम इविगठण ने भणनाः स करिनेज्ञन।। महिणाइमाजजी इ गडिनी दिखां हो जिल्ला के विद्यारिक गुक्त करिया हिस्सी हो स्वार करति है।

इनिनंहरू मक सम्भाभीय! प्राच्या सम्बद्धाः स्थान क्वमभउभा। मिक्र उ। भिष्य अयमभवा उसगा विभाग ।।वद्गरंगा सरा अंग्रह नवा सार

भूगहरा विस्तृत्वः सविभित्रि गी सम्यास्त्र सम्बद्धाः ।। व्यास मस्सद्धारमः स्पर्वाद्वात्रम् रः।। उउनियसभास्त्रयभुहरू Aarle William Domain. Digitized by eGangotri क्रीमुख्यावित्रभिक्ति॥ उस्व स्यानाम्बरमविष्णस्य मा। १०। भउगम्बर्ग गुज्ञभुरु गण्नुसीहर्ग। हर्गिस्टरम सर्वविदिशिहुग्रा। १९०। मन

वादलासाउद्याहरूपस्था गी। म। जिनक्वयर्गियात्रिमहरू यात्रिमाम्यि॥३३॥ यस्त्रेत्रक्त भागवस्ववस्य स्वयः।। या रायमहासम्बयभाउसम्ब

अर्थ ग्रह्मकामाभवन्यग्रामायभ भागाः।।ध्रम्यम्दिरम्।उत्तक्म अगामहायमा। अथ। वस्कंसमजीत निगुउमर्गिका हुन्। हिन्दु प्राचिक प्रमुख्य अन्माउद्यान् वा । १०। इस ह

गी

33

धभभग्र नहां भजनका गामि अज्ञानिसमिक सज्ञ यानियान्य।। आयिय इत्राउपया ना नाभह कमण्यम। उन्धायनियं ज हणानमारु हुन ।।। ३५। लागभ

रणभेक्षायमभाम् उपनिष्य।। उद्गाउनिन्ह्यु भए। देक्सम्प्री नमा। शामणिकु गणि देवंसंभ वियस्मियविष्ठः।।यं याणकाते

उतिसीरगवसीग् अपनि अवब्रह्म विश्वयायाम्भूमीतस्यात्रान्भा गण्यतविद्यान्यसम्भरम् ASTREES WARE FIGEIN मराभक्ति मार्थे सामान

रमक्रम्जभवद्भविमुख्याम् विवादार केंद्र क न। भ्रायान कालम्बर्धार्थिति ।। यहा र र प्रभाग प्रवेशक्ष

सर्गाहर विकर्ति समार्क M. असाय अशिक्ष विषय युरुयवाचिर्द्धवास्य अवयूर ज्ञाहर देश के स्वाहर में स्वाहर 是是比较过程的由。在6.6

कलवासा।यः य्यातिसमन्त्र या उराभुइसमयः॥ थ। यियवाया स्तरह वहणड्डिकल्वरमा।उउ सर्वाउका नुयसका उम्ह वस्त विशारि अस्तर्भक्षत्रम्भवस्त्रय

गी।

हुए। सर्वि उभने विष् भूसमयः।।।। मृह्यस्यायुज्ञन्र क्रियानिया यग्ने अस्य किह्यादियाजा निष्युवन ।। व विभगलभनमाभगगभलेवली

गमभन्भग्रहः। भवस्यगा भाग इउ यस कि इव रेड असाय रसाउगार्थ। युगालकालभन्नस मन्तर।। ठकुभिक्वयावलन्य क्रवेभष्टग्रालभावष्ट्रभग्रहाँ

यग्यमयगिक्तिमा । १ । । जी यम्बार्वेमविम्बम्बिमविम 03 न्उयंबीउएगा।। यक्त इंब्रिक विष्यान सम्मान स्थान स्था स्थान स्था ।।०९। सम्बन्धाः लिस्य सम्बन्धाः

作月5日7川当夏亚亚亚亚引沙州 इक्डार्ड्ड्डिंड्ज्य प्रभागमा ।।यः भ्याति एक समानियाः। भगाउभा।छ।।मनहरूगः।सउउ

जी।

येभेभ्य गीति हम।।। उस्पत्म लकः भाजनिद्युज्ञस्योगनः 10म भाग्यस्य न जान्य णलयभग घुउसा नाभ्वति मज ग्रानः समिषि यासंगार

(०५//अव्याज्यसम्बन्धः सन् रविद्यासार विद्यान यभुनत्तसन्विष्ठा का भाष सयुगयद उम्रह द क्लिक्ड गित्रमान्याम्बार्मान्त्रीय かるこ

णगः॥०भागवज्ञ इजयःभ नायर विवासी गर्मा भय्नीय नुजुर्ग सज्जभयक-श्रिक्ष अस्मा साम्य स्ट्रा र्श्व युनीय गार्गम्यमः

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangota

पाजयुरुव्हजगामा। भाभ रसम्प्रकर्वे वृत्ते वृत्ते वृत्ता स्रा उत्। वि:समन्यक्तुयन् उनविनम्वि॥अ।।महज्ञक्तर्थ इंजयमाद्रः यामगातिमा।य जी।

युप्तिनिवाना जामा मा१३०। मुरुसः सथाः यज्ञ इ।लहस्र नहया।यस्य अस्त विकुशनियनभविमम् उउमा। अ । यरकाल इना वाडि भाग डिम्ब

योगनः॥भ्यागयानिग्रकासव। हाभिक्षाक्षाविद्यां है। रण:मुज्ञाः यद्मभाउउरायलग्रा ।। उर्ध्याप्रमस्ति इत्र व्यक्ति विष् णगः॥अम। अभगविभगत्रभः

किंग्स के लिए

भक्षभाग्नि ज्यनमा। उत्रम अससमिति है गी सुस्तिव उँगा अथा मुक्तात श्वामा है। यह स्वामा अध्या । मान्यमा । प्रकृषाया हमायो । महयाव ३३ यन।।। १०।। ने जी २० जी

यऊल्वर्जीअक्षिक्ष्यन्।।उ स्म अविभक्त स्थाय अविकार लन।।३१।विद्यययायुग्धासम वमान्ध्यम्हात्त्वभूतिधुमा ।। यहित्र विदेशित स्टिश्यो

थरंभानस्पितिमाह्मा/१९३/।ऽ A विम्रोहरावृद्धी उस्पति सम्ब कविश्वाययगम् मीत्रभात्ते। नुसवाद्यक्त जनिय मनासास् शया। उगाउँमी हमा का वाचवामा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उम्राउग्रहामभ्वक्षाभ्राभ्य व।। एनवियन्भिक्षंयञ्चरभ हमंडरगा । गणविद्यागण उहामविड्सिम्भुउभमा।।भ रकावगभवसभमक इभर

यभा। अभुमुक्त गानाः युक्तयाप गी। सस्यग्राम्य । वस्यम् वानग्रहममावस्ताः।। 03 स्व याण्डिस्य सिंह हा हि अविगा भन्ति ते सबकु उपन

नम्बर्गास्तिहरूरुयान मुनिकु अनियम् में येग में मुग मा। इउड्डम्इउस्सम्म 5351वनः॥थायशकमित्रद्रे निर्वायः स्वर्गमजन।। उस

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मी

भवाल्क्रिंगतिभक्त्र नीर्यण गया जासबकु गरिक नेयस्र हरियात्रिमाभकी मा किन्ध **डायप्रभारिक ल्यामिश** एसप्मा । भूरतिसुभव श्र

हविस्थलिसम्नः पनः॥कुउगः समिमत सम्बन्धत उचमग्र ।।।।।नम्भागिकमालिवेश वियनक्रय।। अम्भीनवम्भीन ममजायुक्मस्।।७।। मयः ह

कल्युक्ति। अयासमग्रमा जी। । जिउनानेन की ने यागानि परिवा 3।। भवार निमा अक्रमान्धी उनेमिम्या याँ हार्यम एने ममज्उमजन्त्रमा मधामभ

याक्यालभय्यावग्रमः ।। गहासीसभंग्रीमैवयुक्त विभित्र निम्राः। १९॥ भजनान्यसम्प जज्ञीकितिसामिजः।।। दराज्ञनव भनभन्न हु उन्हें महयभा । ०३

80%

भउउंकीउय ने भाय उन्रमुक्त III' व्यानिस्वन्त्रम् यक्तप्रभागा । जनाष्ट्रनयग्रान 010 मार्मियम्भियम् करनया महानव्या विश्वत्र

म्यामा। थ। महत्र उर्द्र यश खणक्रभिध्यमण। मंत्रेक्रमक्रम वणमहभिग्रह्मउमालि विराज्य स्वाग उसारामा गभजः॥ बहं यविर्भेष्ठगद्रा

गाः भयस्गित्माला।गाउँ उप क्रः भादीनिवामः मंग्लेसक्रा 10 0.3 ॥ युक्तय् अः नेनियानवा णमहरामा।।०।।।उपास्त्रम जवस्तिग्रज्ञ सुरात्रामा

जमान्यमहरूपिक विष्टिति मज्ञन॥१।।इविकृभंभभभगः। अअधायाः यज्ञानिष्यः स्रातिस् जयन।। उम्हम्मान्भाम् लेक्सम्वितिष्टा चित्रवर्डे

गान। १३०। उउँ क्राधनलेक गीं विमालकीलभूरुभयुलेकवि 0 मित्र यो यस भन्य प्रमा 003 रा हिक्रासक्रमाक्रारा ।। यनराष्ट्रिनय ने भागाना यह

याभने ।। उसानिहा है युका नार्य गह्मचळभूष्या । अवस्त्र इवारकायणात्रम् चयाविगः। ।। त्रीयमाभवका त्रयणा त्रवि विभवकमा। गुज्जिमवेग्रह

भी ।

नंदिज्ञामभूकरवम्।। नरुभामिक। शका महा। है ही इस स्टूर्ड हिराहण क्रेबब्राक्रेबाचित्र्वात्रीधव्याः । इंग्नियानि इंग्रुव्यानि संस्थित नियमभा। उथा यह सम्बन्ध न उध

यंभठकुभ्यमुत्री।।उम्छठकुभ क्राभमाभयग्रजनः ॥ १००१ व ययधीरा स्वाधित मिया।।यउयस्मिकं चयाद्र यमित्र के भागा । ३४। स्ट स्ट १

जी-

फलग्वंभक्तमक अवत्रना <u>महा</u> भर्यगयुक्तमानिसक्तिभाभगम् भि।।३३।।समें जभव कु उभन्म वृष्टिभनिष्यः॥विद्यातिउमा रक्रमयिउउस्माधक्म।।३९।।

मियमस्यामार्डणाउसास्त्र एक। अभुग्वसभग्रह! सम्रह विभागित सामा अमित्र विभाग ममग्रक निमाक्षति। किन्यस् एनीकिनमेठ जा यूल होता ३ शाम गीः

किया जरण सिर्वेधिस्थय नयः। सियंवेद्यसम्भग्नम् थिया विभागा विभाग । अविभ नगुर्जाभुद्धारहजुरगञ्चय सुया मित्रभसांपलेक भिर्मश

एठण समाभा । ३३। मज गठवम कु जैस्ट्रणी भाग सम्भाग न्स्रियिभग्जनभग्न-गयलः।।३६।।ऽतिस्रीतगवद्गीग अमिस्य वृद्ध विक्रयाचा माभु

श्रीत आत्रामा वामा विकास नी गणायक्रयगान्य मनवसराय ।।जाराम्बरम्भागात्र **ब्याज्यमजग्रहमायम** वमः।। यरजसीयमा ज्यवहाभि

क्रिंगक स्या।।।।।नमवित्रास्था युक्वनम् स्यः॥ मुह्मक्रिक् वन्यमाज की कम सम्मा।।।यम भणभगक्षेत्रवित्र ने महस्रामा। गुम्राम् । सम्बन्धमन्याः युम्ब

गाँ आवित्र नम्मम् भरूकमाःसमा। भूपमः।पुरुव्हा 0-रावस्यम्प्रयभवम्। मार् 6.0 भाभभगउभिभ प्रजनयमयम । हिंदिन क्रिक्न क्रिक क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न

विष्णायाभज्याभग्रवण र रामनवसुषा। मम्हवाभागम् गयभात्तक अभः भूए। गयभातक उमाः यूरः।। गाविक् विवागमम यविति उत्रामितिकम्पनयगानम्

एउंगासमयः। शामजसमध्य हर्वभाः सम्प्रवाः ।। इतिमङ्क OF ०-७ ण नेमान्याः स्वस्मिनितः। जामान मुरमस्यभू ज्वययनः यरम्य मा।कषयत्रम्भानिरंडसित्याभ

कि रिणाउप स्टिम्स स्टार्श विस् विभवक्सा। मग्भविद्यां वेयं नमाभययानि ज्ञाणां अभगने न भाजभजमञ्जू नण उमः।। गमया थ मुरावसीयनग्रम् ।।००।म

यः॥यादिविद्वविदिन्नकानिभाभ त्रासिक्षिमा के।।कविद्यभ्रहिय 00 000 गिसंभाग्यिकित्रयन किस्क अम्कृवेस्रिक्तिस्यावस्या। शाविभूत्रे ज्ञानियं गिर्विक्र विक्रिया

गम्न।।इयःकसयभ्रहिम्परे अर्जेनिस्मिस्गाड्सा। १०३।। एसि गायाच्याम। जिच्च विकास किहाकु सविष्ठ उया। युगा ह उन्ते मस्याधनिवस्य मा यहस

गी

गणुरुकमभचकुग्रमय किउ महासार हमस्य स्थान माअग्रमिहान्यकविश्वज्ञाविष रविरम्भागा भगीकिम् रूपिम नकारणम्य समी।व्यानसम्भव

म्भिम्बन्भिम्बन्भवः।। इसि यण्यन जासे के जान सिक्स ये रा।अशास्त्र ज्ञास्य विष् मग्रहारहासामा । वस्तापानकवा क्रिसेन्शमणीणभक्रभाशि।

यंग्रम्मम्भागम्।विद्याज्ञय गाः द्रस्कामा संगनीन भक्त कर 903 सामास्यामात्रात्रामात्रह्मात्रार क्रीभाजहगुरद्वाता ग्राम्यक सहायाय हुन गा भवा कि

भावगणिकमालयः।।१५।। म नुज्ञासवराकाकार्यं स्टिम् ग्रम्।।गञ्चनः कित्रमः सिम्नपं कियालिसानिः। उद्यानवस्य व गवित्रिमासभाउँ हुवसा। विगवे

गी उगगाज्य जनगण्य नगणियमा ॥ ३%। मयुग्यम् भजवग्राय च नभक्ति 200 कमाका। भूगानवाभकरें सराज्यसम्बद्धावन वर्ष किनपानंबन लेंद्यक्रम्भावस्था

क्रिस् अस्य स्थानिक स्थान सम्भक्षणा अशासक मा म्शनकालाकालयग्रमाजमा।। भागा जिस्सा प्रमाणिक यित जिमा शियवनः भवग्रम

भिग्भः मभुद्र गभजभा । ह संज्ञान सिस्सिस्टिस 0= भूउसाधिएक वी ॥ ३०। सजा 000 ज्यास्य इस हार्यास्य न।यहान्द्रिविङ्गिवङ्ग्याः

वस्यमिक्साश्वामहाराज्यम्। अम्बन्धाः सम्मान्य सम् । महस्य क्षयः क लिए गढ़ाविष्ठ उसाणा भाउ। भाव जिल्ला वज्ञकवियग्रमा।कीत्रीःमीवाज्ञ

गी। राग्रेज्मात्रियाधित्रिक्षा यज्यभाग्यमा भागाय शेष 000 रमम्हमा सम्मन्सनमा 北京地区不同时的 यु लयग्भि अग्रम् गिर्म ग

मज़मागायिम्हिन मायिम सडमहद्यामहमा अवार्ष नवास्त्र विक्रशास्त्र वास्पन्छ यः।।भन्नेनामधुळहामःकवीर न्मम्माःकविः।।३॥म्द्रम

學學學

विज्ञासिक्तीहरीक्तियासिक उथा। में ने विन सिमें युक्त ने यु 00 मिहा हिशास्त्रभारहाधाः 00) मवङ्गाराणाउसम्बन्धान

विक्रीनियाउपात्रिक्की **५५ विद्वावस्थाम् ।।** इत्राह्म किंत्रीम संत्रमा स्वामा ।। उउँ व व ग क इस स इ लाम स

सवसाम् विषय विषय न्राम्ला विश्वहाद्रिम्ह E00 र्शार्य। एएएए हिरीहर्माक्र उस्रेडगवर्स्न उस्र परिध्य जुरू ग्रामस्यात राज्यस

वाक्रविक्रियम्भागम्भागम् शास्त्र विकास मान्य विकास पामग्रहसहाय साग्रायमा युरे येजवम्सन्सिलयं विगर्भभा । ठवा स्याष्ट्रिया ने मुजीव स्थामिम

000

या। इर्ग कलभग्रहाग्रज्ञ थिम् हेर्यभा। एवम उन्हेर्य उन्ह भारानियाभवगार्वभारतिभिद्या मिउउथम् नुग्यस्य साम्र संग्रित हो भवा इसु भितिस्र है।।यंग्रीश्वर्ग्यम्याग्री भरूयसा।। है। विक्राका वाजवाम ॥यत्रसयाज्ञ याल्य मारम् जसमा।। रानेवणनिक होने गगवकाराजीनिमाथायस्य इ

गी। ००

वभरत्यवित्रीमग्राच व रू इस ब्रेस चार्मिस हा है। गम्स्य स्थाति स्थाति । हरम श्चित्रमामिरवापमं इन्ह रुकमयञ्चारम् भूभिन्न मिलि

रुउमामक सम्बुभन ने बुस् ध्राहिक्षिरीययहर्गे। प्रिष्ठ इसयामचासा। ३।। सन्नय जगागित्र मुक्त अस्ति। या अग्रेगिकारामा अग्रेगिका विश्वास्थ्य स्थान

030

वयाभेड पसम्बरमा ७। यन। कवज्ञनयनभाक्ष केंग्रेजिंग अन्तर्मा अनेकिक्टिंग महानी १०। सिम्मार दिक निष्य भारताराम्बाराम्या

भवानुरभयद्भवभाजेविन्द्रभ त्रभाक्ति अद्भाजभुभुग्व गमन्द्रिज। योग्ना सम्मामा मक्तमस् मज्यन्॥०आ। इक्सणग्रह्यभविष्ठसम् 。 。 。 。 。 कार्शियम्बन्दिन्त्रमारिय यवसमाणागुः सविस्याव ब्रेड धरें भाषन क्रया। ये लखें। विभागविता सित्रा सित्रा क्यासी गुरुपा ।। यहा सम्बर्ध

स्वाद्या क्रिस्स स्वास्थ्य स्वादिन स सङ्गाइज्लाममक्रमलास नस्भावितारहत्वस्वास्त्रम् ना । । भामनक वाक्र स्वत्र ने ने स्थ स्मिश्रभव उन उन अभा। न ज

C CO

033 00

भएन यनभवादि यस्। भिविच चगवे मुज्या। की कि गी ए ने ग किन्यित्र लेम्ड्रिणिश्मिम्बर्डि। जीमिम उसा । यहा भिरं पृति गैड्डा भमग्राची भग्नल कड्डा

मभूमयमा। इसहाग्यामंबिक्ड संद्रमध्विच्च स्पानिण नमा दिम व्यामाच उप अगी भाम राजन स्तु य मध्मर्मे।। ०३।। युराकिस दानुसन उवीरभाग वर्ष मिसद्ग्रमा।।

यस्भिरंजीभुज्जमवज्ञभागा भविचित्रिमं उथन्म। ज्ञान्योष 00 035 हैरिम्भ नं कि हा युरं युक्निम्म इसवा। रुद्धारु उड यसग्उव। र्वलक र्य यहाँ धरं भाग स्त्रा १९॥

मक्ति हो सहस्व विक्रिक्त क्रीम्याहिलाहिल स्थाप कुमार्थित स्थानिया मितिवयस्ताहः॥१०॥मग क्रियमवेर्यम्भ स्वित्वित्री।

爪 99 03年

मन्उन्नेभगन्न।।गन्नचयक्रास् रित्र महारहित्र कि स्वार्थिक वसवाशाद्यमज्डेवज्ञवज्ञ व्यान्य क्षेत्र वालक स्थानिक ।

भृत्विश्रभुम्प्रमा । न्हःस्तुस् क्रीयुभनेकवक्रहाउपन्मियुद्धि। मलनेरमा रुङ्गा छन्। रागणाउनिकासमम्बिक्षः ॥ अमार्यक्राकानम् अध्य

निस्ध्वकलन्त्रमिकान किमन एनेन्ल देसमञ्ज्ञाम 00 034 क्रवमणगाविक्स। १५। यस्री एउंण उगभूस्थ्याः।। सत्त्रेस् देववियालसद्धेः।। दीभून्

ण: भाउपरमार्भभाभागमा चार्यचार्ययमहै । वका लिंग्डियाडी क्या करा लानिकयुनकाना किकिन्निज्ञ क्रमगत्राथुंसक्षत्रव्यक्रिवेन्द्र

जी:

भारः।।।३१।।यमन्मिन्यद्वेश्व वगाःसमन्सवादिभाणम्बनि ।।उष्डवःभीनग्लैक्नीगनिमनि वज्ञान्यकित्यान्ति।।१३॥यमा युक्रीयुश्लन्य उद्गविम निन्।

मयसम्बद्धाः॥उपवरमय विमन्तिकभ्रवाधिवरालिभभ च्वगः॥१९॥त्तिक्रसग्रम्भ नः समग्रज्ञकासमग्राज्ञ लिक्षााउणिकमञ्जूषायसभग

·31

हमभवग्राभग्रविश्वािशाञ्च एिडिमकें है वा नुगु भेन्स सु उ च्ववायुमीमाविष्ठ विस् हरानमान्नित भूल गामि उन भूग विसाविमकिगवान्यगा।

कलिमलेकडायठ यु ये चिलक अमफा सिक्य वा उपार नर्विधित्रमचियविक्रगः भुवन क्रमयण।।।३३।। उस्त उसविस्य मलक्षेणिरमहेर्डुग्णमण 032 00 111

हमा। भववज्ञाभवभव। विभाउभाउँ हव सह सामिना। १३ विलेमिक्षे मण्यन् सम्बन्ध माञानिययपवीराना। भ्याद्रश स्वादिया हे या विश्वाद स्वाद स

लभयग्रामा असाम क्रिया गर्मा जित्स स्टाइ इस के पहार हिस्सा चेपमां किरीए।।नमस्राज्य प्रवाद्य स्थान स्थान ज्रहिर्मायफ एक मार्था हिर्म

धीकमउदम्की गुणगम् जस्ट गीः नग्राज्ञा । वहासि हो उपि हो । वहासि हो 09% म्वविभवन्य अधिराभिष्य मा 030 यः।।३०।कभ्याच्चउनन्मग्रमण मन्त्रीयमेनुक्रल्याक्रक्त्राभन

उम्बम्गागिविष्म उभवाग ह्युवास्त्राहिताहरू तेथता त्राच्या सम्बद्धित यं निणन भाविंग भिवे हुं मधा मणभड्याउउंवि सुभन्उउथा।

आ। गयुद्रभीयचन लाममायुः 训 मरुपानुसुप्राग्नमान्स 030 नमस्सम्बस्य अत्र । प्रमुख्य धिनसन्म सा । ३७।। नमया सा क्वाह्मसहस्रहाम्बर्ग सवागिन विस्मित्र मिन्न स्थान सवसमाधिधउउसिभव॥है। भावतिसरुप्रभक्षयन् जिन्दे जगम्बद्धमाविशियणवर्गम भागावस्थाम्भामक्राचन 11) 00 033

गियाम् शायम् वलभाग्रमसह रिसिदिजाम सामन के गानिया। एक वर्ध हो उन्ने भक्त उन्ने भ वेश्वेमजभयं संयमा। मिशाविश **इसक्त्रमाग्राज्यसम्ब**र्ध

वयमत्रायागा। नरस्म वर्ष विकृ! काउँ हैं लें कर ये सभुति भभू कवा मिशा उसम्बलस्य भिष्ण यक्यस्माप्यस्मात्रभागभा इस्माधिउवधुस्य मापवस्य

033

यियाधियायाहिमान्वभिक्रभा ||FF||मस्युप्रचेक्रियाँ||सन् शुरुयनम्भू विष्ठिमन्म।। उम रहेन् वास्कृष्ट इच्चा विकास मणगविवास।म्याकिगीरि

नंगरिनेएइज्सुभिष्ठाभिराष्ट्र अभजउबेव। उनेवड येलम्डा इग्रान्स्र स्वाद्य स्वाद स्य ा**म्यायम्बर्गाम्याम्याम्याम्या**

00 III

उभास्येगा। उग्रीसंयविश्वभन्। उभान्यम् उप्हेन्स् अध्यम् ॥म् शानवेमयह्न स्थानवम् त्रियाहित्र ग्रीहित ग्री।।। ग्रेडियाहित महम्प्रहलें केंग्रंड महामा

नक्षयंगाम्यामग्रह्यामग्रिव अक्कर्वसभूगुग्याभीमञ् भम्मा। ह्याउँ । भीउभानाः य 'नसुउप्तमुउयभिम्भ्रयस्थ क्षाभिक्ष या सम्बद्धानिया स्थानिया स्या स्थानिया स्या स्थानिया स्थानिय स्थानिया स्थानिया स्या स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्य

गी ०३५

द्रेस विकास के उपम्य या भास इयः। यश्चास्यस्य सम्बाग्न नेइडायनः संस्वयम्जङ्गा ए।।यन्त्र ज्ञापक सुक्रमान भु भारत सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध

भिक्संबाउ! सम्गः भूकात्राउ! ॥थ्वाविम्होद्याक्ष वाम ॥स्त्रु सम्बद्धाः इयक् अवान भियमभा क्रम्युध्युव्य भूतिरुक्तनकारिका।।धा

जी:

व्यव्यामन् इमहक्रपर्य संगासवर्गमिक्ये राजवर म्बर्यसाम्बर्गनम्याया। स इत्रविचित्रश्रस्थ्यानिम् यमाथशाह्याउनस्यामहास्

जमविवियत्तन। खुउम् भूमउरु नभूनभूग्यागुग। धर्म असम र्थने अस्ति है । स्थानिक स्थान । निज्ञाः भवकु उभ्यः भभमित भारव।। यथा। इतिम्हितावद्गी।

0337

गुभ्यनिस् सुद्धाविक् गर्या। मभ्मीहक्षालनस्वामित्र उपम्बन्सकाम्महाया॥ ७०॥मज्ञनउदामाणव्सउउउ ज्ञयहज्ञास्य यह या अउ। यम

थक्तरमहक्रउभक्यगिवामः वसनवभानरमुजाउयाभाग म्स्यायार्यभागस्यम्यज्ञस्य भग।।।यउड्डामनिय्युभव्जे

भी ०३३

पर्यभा भन्गाभित्रम क्रिक्समम्बद्धाः अवि येष्ट्रीभ्यग्रमसन्समन्त्यः ।। उपायविसामवसव्छ । । । भुः।। हा जिस्रिक उरस्था भारत

ज्ञभज्ञम् अस्य विश्व विश्वाहरम्बद्धिया। स्टि वं उसवालक आलभावस इसमयगा। यन इने वयते ना

11000

हममङ्ग्र**भरम्भग**ा उगार्खाभनिए गण्डा अस्पर मिउम्उभभागासस्वभन् गमुभौग्वित्रितिव्मय्।।निविस ध्मिमख्यभुउड्ड नसम्या। उ

म्यक्तिंस भण्डेन मर्जि थिभ विकित्रभा महाभयेग नउउँभ भिष्ठाभेगनज्ञय। श्रीमहास्र अभजिभमञ्जयम्बर्गाभ इजभाषिकुमालकचिमिन्द्रि

सम्प्रकाणायव अस्म की 03 भिक्रियहँगस्यितः। भिज्ञक ST. अन्तरगार । तिन्यर अवार । १००। म्याज्ञ नमहासाङ्गाङ् नंविमिध्र । एगर्स प्रलिएग

स्त्रास्त्र हो स्वास्त्र स सबद्भगगम्यः कर्णवमानि अमिनाः हमसः । द्वारानिस् हमी।१३।भन्न अंग्रेगीया मन्नि व्यामस्थित्र भने वृद्धि

हमम्बानव्याप्याप्य क्रिणर्ने केलक में क्रिणरेग क्रमधर्वेच्याभज्यः सम्भ मिया। जियम स्वाप्त । अधिक । उज्भीनेंग उह्म ।। सक्य स्था

रगीवभक्तः। समिष्यः। १००।। येन्द्रधीनन्त्रिनम्मान्न कर् वि । सक्त कथित हो गिर्देश समियः।।०१।सभःमञ्चामित्र गउवाभारायभार्यः।। मीउक्षस

明· 03 0年3

षरःगिषु समः सङ्गविवित्ति उः॥ 93/13 विनग्राजिमनी सन्ध येनकनोग्जा।यनिक उः स्कित्भ विक्रिमाम्यिय्न गाविशाय उ वसम्भव्यम् यह सम्बद्ध

मुक्रणनभू उभावका सुजीवसीय यै:॥३-॥इ विमी हमवड़ी उभागन थमव्या विज्ञायार्थे ग्राम समीत्र ल्नासंबाद्यक्रियोग्रीस्वाद्यम् या।।०३।।यहा यज्ञामा युक्त विस्क

ती १०३ १०६३ धम्बहां हो ग्रामवम्।। प्राप्त किरिक्षियां या विश्वासी स्थारिक सर्वेशाय फिर्हा का किसी शा गिरके उच्छा भारति की या ।। ।। उद्देविशेभूफ्रःहार्याभितिहरः॥

113 तिरुग्रिमियोग्विक्सचित्रार ग्रमियमित्रिक्सवहार्यकार्य ।।हेर्ह्यस्ययस्य यस्य सम्भागम् ।।।।। हुउयञ्चयमञ्जयिकारिय उच्चजा। भग्वयम् कवच्च उद्गा

別の

मास्त्रमम्भू द्वामा हिस्सिक ब्राज्य ण्यीउद्यक्तिविज्या अवक विक्रियाम्ब्रियाम्बर्धाः विज्ञाथ भजकुगरुजवार क्रिग्रामवम्।।इशियालम

मक्रमध्याभग्रा । इस 看出:利贝尔/四升区3月37以 ति।। एउड्डिसम्भन्मविकार। अम्ब्रिमा व विमानि इसम् क्षित्रमहिमाजीमहस्र

महियाभनेमी में महिया मितिन मी ग्रज्ञागाडिभयाज्ञेथवगय्भ 033 0年》 ग्रह्माण्डमाण्डलग शिक्ति हास हार से मार होता है। अमिक्राम्हम् गुरुष्टाम्ह

हिया निर्हेग्समिग्र इसि सुनि श्रुपयित्र भाशामिक्र नहरीं नहीं जा है कि मार्गिति कि कि मार्गिति कि म ममविद्वभग्रितान्सम्बि।०॥

मा। ग्राह्य भागियं क्रम्ह्यं यम THE SECTION OF THE SE उट्या।००। याययउच्च हासिय व्रुव्यान्यान्यान्य विश्व क्रमाउन्भन्ध्या शासवरः यालयाम् उद्वित्त स्थापमा

भवग्राम् तिमञ्जित्सवमाग्रहित भेति। भविभ्यग्राज्य मंस्रि यविवित्रि अभागमा अभागमा विवि विग्रालगुलहज्ञम्।०मावकिर उड्डज्जनभूमां जामवमाध्य

गी: भारत

शाहर कृती प्रति स्वयं हार ॰थ। अविरज्ञ महत्र अविरज्ञा भवम िकामा । इउद्युग्य सम् युर्विस्थ्या विश्वाणितिस्य सियाङ्ग विस्रमस्यासस्य।।हरेण्यहा

नगर्हिम वस्यिक्षित्रमा। इतिहार्य यहने यह यह जिस्सा भ उः।। सन्जग्रानिह्यसम्हवार्य थयकृत्री। ०३।। यह ति यह सम्ब विद्वरामीउरविपाविकग्रेष्ठग्रे

भी • इंद्र

व्यविद्यास्त्र स्वत्य स्य स्वत्य स्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य रक्गलकरहें इज इ! युर्त वित्र हुउ यग्यासायम्। पार्यक्री इति इ न्हुजा आयुर्धियः युरुति स्कृति इ रुभ्रहित्त्र ज्यांका नग्ना

मङ्ग्रिं सम्मर्हितिणस्मा।१०॥ उपस्यानमाग्रहग्रहमार् नुगा भागज्ञी मार्जिन है । धेयुरु डिम्युल, सद्या महमावा

गी। ०३

भानियनसङ्ग्रेविहायज्ञ।।३३॥एन। नम्नियम्विक्षिम् मन्मन् गरमाहनयैगनकअर्थेगनमाथा ।। यह उत्तम ग्रान्स मुराह ह उ याम उ।।उथिमाउउउच्चिम्।उथा

यणः॥ अधायकमञ्जय अकिष्ठ अंद्रमावरणङ्गममा। हाउँहाउ ग्रांभयगाउडिहिक उउ भ का। १०॥ समसव्यह्य यो सूत्रेय म्या भावित्रम्य वित्रम्यः यम्तिम जी क्य

यश्री।३१। समयग्रहिभवर्भ मविकाउमी स्वामा। निकिन सुन्तर मन्डडेंयाडियांगाडिमा। १३॥ य हर्वम्क्यालिइयभाजिस्य मः। यथहाउउषा सन्तम् वर्गाम्य

वित्राशिशायम्बरम् गहजाहित्यीहिमाशीव्यहाँद्राप अवभाग्य भह्यः॥ मग्रीवस्ति थिके ज्यनकरीउनिलध्या ३०।यमभव

गउभाकुमक्मन्यतिएउ।।स गी माग्विक जेम्ज उम्म नेयाल एउ 03 ॥३३॥यमभ्रमयहेक। हासुलक 040 मिमावि॥होहोरीअग्ठ मुस्क मयविकाउ।।१३।।क्रीक्रीक्रीय्ययव

मनग्रनमन्या अभ्वतिमंत मयिकर्तिं उथामा।।३म।।ऽ।उ म्हिगवस्रीग्रभ्यान्यभूक् विद्यायागमभू ग्रेश्ना त्राम गण्डार्डायान्यम्गाया

गीः OF 023

ममेसायशाशास्त्रमाहगाना । वागा यंक्य। यवहा भिरहराना श्री अरुपाय अरुपाय स्मित्र स्म भगिमिद्रिमित्रीगाः।।।इम्छन भया विद्यमभय समग्रा ॥ ॥ शासम्बित्र क्रिक्न सम्बद्धाः गर्यक्रमा। संस्वः सच्छु उत्तर्वे हव्रिकाउउ।।आभवयीनभुकाउँय अउय:संहवविया:।। उभावक्रभं

भी •

इनिग्रंत्रवीणयूमः थिज।।म। सबे गणभभडाग्राज्यः यहार्गमस्यः **।।निवश्रविक्यालमहीहरू** किन्मा स्यमा। थाउर् भरंति अल्डा कुक मकभगभयभा भाषभङ्गनवया

तिष्ठन सङ्ग्रनमन्या। शामाम गमकविधित्रभागमभ वसा।। उत्रिवपाउकी उयकस्भ द्भन्छिन्मा।उभस्छन्गवि विमेजनभवम् जिन्मा। युमा

गी। ०३ ०४३

मलस्ति एकि सिवय प्रतिस् आआभरंभाष्मक्षयिग्गः। महाडाडाम हा । हरका भक् भूभाग्नेस् वर्गाशारणसम् व्यवस्य वर्गाशारणः

भरूउभञ्चवउभ! भरूणभूषा। णासवर्पभ्रद्धेक्षस्यक्त उग्रयज्ञ।। इन्यम् यम् अपनि र्शिवार्मे अविषया । रः युवाद्वाग्रासः कभण्मममः

भूग १

स्थारणस्यानस्य निव्य विहरविहा १०३। मुयुक्म भूग विश्वयमध्मिद्रायम्।। उसस्य निरुवर्गेतियोर्नेक्रमन् मन्। १३।। AMITALE SHOULD BE SHOULD B

हुउ।।उद्भावकानम्ला भूतिय हुउ। । मागाभि भूलय गरक समार भागवा ।। उरुष लोनसभीसअस्विनियुण्या ग्रा॰शाक्मलास्य उस्ति।स जी जिल्ल

विकेतिमल कलमा। गणमसु हलकः। प्रसन्धन उससः हलभा ॥००॥मञ्चम् व उद्यन्याम लैंड एवम।। भूभाम भेजिंड भर्भ हबरेष्ठनमब्ग। १ । इडिगडरी

भड़कामरिष्ठिष्ठीगणमः॥ण मावग्रलगिक्तमप्रीगम् निरं ससा।।०३।। गरेयलहाकारं यमन् अन्य निवा गिल्ह व्या वित्रमम्बं वें मित्रा कि विश्वास

्र १५० भी

अनुगन्गीर में जिल्ला है कि स्ट्रार्टिक वारा। गाम भारगार प्रविभन्न स्थान्य ज्ञात्राम् स्थान्य वाम।। किता ज्ञिभी जुण नगन गी जिस्सी जुण निमा कि से मिंग भी जुण

नाउवउडा।७०॥वस्त्र ग्रावाउवा मा। यकमम् म्यादिम्भेदम्ब मधायवा। निष्मं युवा जानेन नियामिकश्वी। १३।।उम्मा नवमाभी नेगुल इनिकालुगा

गुञ्चर इर्वयेवित स्रोनित 师 गा समर्गणसायाः सुस्रः सम ०थ्उ तथासकाष्ट्रन्॥। उन्नियापि वयोग्ने चित्र क्स संविधा भागपभागयेमु इस है भिर्षे.

यक्षयः॥ सम्यास्य प्राप्ता क्रियामार्थ हो। ज्यामार्थ हो किमार्गलहिंजीं नेसंबर्गाभा ज्याम में हे ग्राहित का विकास ज्ञाविक लिल्म जी सुष्टिस्स जी: • ५०

र्मित्यम्।।मन्त्रम् भणश्चिकविकस्माआादित्र मीरगवडीम् अपनियमवर्ग विद्यायाम् म्रात्यात् न सवप्या लायनियमना सम्ब

इम्बन्धा व्याप्त में इम्बन् 五川至雪哥当州口; 五山村名至北 क्राव्यम ।। बर्ग भगभूपक नियसंबम्भवम्बिगा। वात्रया 国国社社の科技が四川の一場

्थं

ग्रेज्यविधयभ्वालाः।। यग्रञ्ज लाह्नुस नगतिक स नवहानि भर्य का आर्य सम् स्मान्द्र ज्यान होत्र इस् युविसा मन्त्र मनमविद्य क

Dr

अलमभरमस्लम्बर विश ॥३॥३३।यम्३ यामिका वि भिन्नगनिव अ विष्या । असेव ग्रन्थ्य सम्बद्धः स्वाद्धः । भूम्ग्रम्गली।मानिमलर्भ

मी अ

कणिउसप्रम्यस्य म्यान्य निरावि निग्रक्मा। इस्विभजाः भ जमः जमक्र नहां प्रमान मह्युगा। थ।। नगरु सय उम्रद नममद्भन्य वक्।।यह रानिव

उन्उद्यमयरमं भागा गाममं मेलीवलेकलीवम् उः भराउरः।। भनः धस्रानी भयान भ्रतिस निक्स ति।।गामग्रीरयम्ब भेतिग च्युरमग्रेचाशामजीहेगिम

गी. १०४ १०३

या जिवाय जा विवास या जा हि। म्बग्रुः स्वन्यस्य भूग्णभ बमा अविश्वयमनद्वायविश्वय नयसवउ । । । उर्ग संग्रेति वर्ग । विश्व मामहावपद्यस्य स्था िम्बमा। । यउ बैह्य का उपनि ने ने गा। इड्रम्डमः॥००॥यम्बिड्रम् णगरु सयु जिल्ला। यु सु स

गी। ०थे ०३३

भियञ्चा अर्गे । 1103। गाभविष्ट्रमङ्गिनपायाध जमगमा । यस्राभिक्रियवी:भवा समें इरास मुक्। । ०३। युद्ध वे नग्रहायालनाजभामि उशाया

यानसमायुज्ञः यम्भभ्यं वस्यविष्या । १०म। समस्मा करू कि भनिष्य भरास्क्र विद्याम मिल्लेमा विद्य सवाज्ञ मवव हवक उत्तक कि वण्डमा । भा नियम् महस्म

समिम्भजभयान्य।। १३नुनुः विभाग्ना हरतह हा विभाग 902 अनिवाहग्रह्मान्य । बिक्रविक्रधावग्राम् सम्बद्धा ल जिल्ला हुन है है है से द्रारा ना

यक्रमस्या।।यावम्रीकाग्य वाग।। यठयं संदेश सहिद्ध नयेगाः। हविकिति!। मानेमभञ्जयश्रञ्जा श्वास्य स्था स्था । भारत भभरभर्यस्याः मित्रयेष

गी

नभा। मया इस्मिल डस मर्वेकी। रम्यलभा।उगाःह्यमणितः मेप मईजिंगां उमानिजा। दवनिस्यम ज्याशीहरित्र स्था है। इस्ति है। धिकमन्त्र याः याजस्मवमा।

महान्मिक एउस पानम भगिमा।मार्ज्याभयविभेक्षय निवज्ञयभगी भग्न गः भग इंद्रेवीसुिहरू डिभियु द व।।थ। चैत्र अभिज्ञ कि स्वयुभगत

वमार्म्बीवस्यमार्थेजस्थांयाज मस्याधायचित्रमनिवादिमगा 093 गनविद्यास्त्राभा नमियनियाग र्नमहं उष्विष्ट ।।। समह यस्ति भंडेणगडाम्हानी च्या।

मध्यम्ब इकिस इस स्टाइस आएउफिसिन्य सहस्यानि वृद्धा। युरुवव्यक्रमलः क्रयः यगाउँ जिंग ॥ शाक्रभमम्बर नधारहासमाममाविज्ञाभाज

ती ७०३ १०३

शरहकी हिंहिर राष्ट्रमाहिक स । शिवास्याम्याम्यान्यः सप्रिस्य म्यूलय ज्ञास्य मिरा क्रमयहगयासाराज्वितिन श्चित्रः। १००। समायममज्यक्षाःक

CC-0 In Public Domain Digitized by eGangotri

भर्गगगयः।।।जन्मस्र उरीहायराज्य स्थाना। १९१६ भड्भयलहिभम्य पुमर्गाष सा। इस्मग्रीस्मयिमहिष्यित युनचनमा । ०३। युमाभया ज ३:म

111·

गळहित्राणिरग्यामुन्ह्र्य फंडिमी अर्चे जंब न मापी।। जा अस्टिक गानवान सम्बद्धित्र सम्बद्धित मसया। यहार भारति यह रखनविभोज गः।। यनक विद्वि

र उसे दर लाम मारा गः। भ्रिम क्राक्षकाम्य उति नाकस क्रानिक सम्हानिक । नुसान्सका विगा। यगा ने गभय क्रिमस्र गविष्ठि भवक्मा। जा। अपीर

मक इरव सम्बन्ध क्रम क्रिया संविज्ञः। अभागाम् जिन्ने स विभिन्द अयक । । उनकि धाःज्ञासमायनगणसा । िहा ये स्वास्त्र सम्बास्त्र स्वास्त्र स्वास्

वर्यनिभा । १९॥ अभेगयिनिभाग्रा अक्रणभित्रा होता सम्भया धैवकि वय उर्वेय वय भगाविसा। १। विविधनाकस्येन्यानमन्भा अनः।।कभः इतिमान्य सम्भा

म्बर्बर्णगां एउविभूजः की न मी यउभेश्वासिक्याः।। सम्गरास 090 न!म्यसउँयाउपगगाउमा। ३३ । यञ्चाम् विधिमुक् गावु उक् भक् रउ!। नमभिन्नि भवाभित्रभापन

प्रांगितिमा। ३३।।उसम्बन्धम् भ लं जिंकरकरहरविकि जै। श्रिष्ठाम्भ विण्नेजकभक्र भाजहीभाजनी **उतिसीक्गवङ्गीग्रस्थानियस्त्रक्त** विष्ट्यंयगम् मुस्रेत्रश्चनभग

क्रक्यभग्भग्भ यात्रका नामधा वार महाया।। ज्याम्यन्यन्य।। यमभ्रविपिभुग्ध ययगानुमुग विगः।।उमिनियुः उक्तभ्रभाउभ करणसमः॥०॥।।सम्बद्धान्।व

मारिविपाइमहीहरूपिक्रीय स्वरुवर । सांडिकीरणासी येव। उससीमित्रिंग्स्य । अस्तु उ यभवध्यक्षक्रक्षात्रकात्राम्य मर्थियमस्यियकुक्तः भागवमः।

गी ०१३

यणज्ञभाविकाक्वाका भाग गणभाशिक्षात्रमान्या जेग्रमभागागा साममाविष द्वाभग्रज्ञः कभगग्रवला निग्

u

कन्नयन् मगीरका उराभमान उसः।।सम्बन्धः मगीरस्त गिर्धः क्रमग्रीम्बयभगाविष्ठज्ञस्य गिमचसदिवियकविष्यः॥य ग्राम्य मार्ग मार्ग साम्य साम साम्य साम्य

भी भी

माजाग्राभाग्राभाग्राभाग थीतिववनगः।।। रसः। भग्रः। सि ग्रह्मुक्राःमाद्वेकियः॥३ विहिद्ध हिस्हि इस्ति हिस्सि हि मार्कनः। स्कारग्रासस्यानः

एर्मकभयभूमः।। याउयाभगउर संभित्र पद्रियंगयजा। उत्रिश्वस धिगमें हेई गाने उसमिय सा ०।। महल्लकाङ्गिहिदश्चिविषम्। श्रेयद्रशाउँ।। यश्चमनेदितिभनः जी ०१थ

भमप्यभमविकः।। श्रिका शाउँ र उस्भे उय्योगिक्र गाभ भा। १९। विविद्यानिसम्भिक्षान्यम् किनम्हिताताता स्ताप्तिकारिया